Dr. Keoti Kumar
Assistant Prof (Guest)
Deptt of Psychology,
S.R.A.P. College, Bara Chakia (East Champaran)
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, MFP)

Subject — Psychology
Topic — चिन्तन के परिधीय सिद्धान्त
Class — B.A. Part I Paper – I
Day — Thursday.
Date — 24/02/2022
Period — 2nd
Contact No — 7808466117 / 6202215708

प्रश्न :- चिन्तन के परिधीय सिद्धान्त का मूल्यांकन करें ?

Evaluate peripheral theory - Discuss it.

उत्तर :- यह सिद्धान्त अपेक्षाकृत नवीन माना जा रहा है। इसे गत्यात्मक सिद्धान्त (Motor theory) भी कहते हैं। इस सिद्धान्त के समर्थकों का यह विचार है कि चिन्तन प्रक्रिया में मानसिक प्रक्रियाओं का, शारीरिक प्रक्रियाओं पर भी महत्व है। इस सिद्धान्त के समर्थक व्यवहारवादी रहे हैं जिनमें वाटसन का नाम प्रमुख है। वाटसन ने इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में अपने प्रयोगात्मक अध्ययन के आधार पर बताया कि चिन्तन सम्बन्धी मौन वाणी या आंतरिक वाणी है जिसमें स्वर यंत्र की क्रिया होती रहती है। जैकबसन तथा मैक्स के इस विचार से प्रयोग महत्वपूर्ण हैं। इन प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध होने का प्रयास किया गया कि चिन्तन में — Neuromuscular activities होती हैं। गूंगा-बहरे व्यक्तियों में देखा जाता है कि ऐसे व्यक्ति अपने चिन्तन को सांकेतिक भाषा द्वारा व्यक्त करते हैं जिसमें वह विभिन्न प्रकार के शारीरिक और स्वर सम्बन्धी इशारों का उपयोग करते हैं।

वाटसन के दावा किया कि चिन्तन आन्तरिक भाषण अथवा अव्यक्त स्वर भाषण है। उन्होंने अपने विचार के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये हैं जो इस प्रकार है।

... अनुकूलन के ...

(1) सामाजिक प्रक्रिया के दौरान अनुकूलन के वातावरण के अनुरूप आदतें को अर्जित करता है। इस प्रकार अनुक्रिया - उद्दीपन की परिस्थितियों के लिए शब्द बन जाते हैं।

(2) स्वभावतः शाब्दिक आदतें (verbal habits) रोपण ... स्मृति ... संबंध - गति निर्धारण मात्र है। इस शब्दों के स्मृति विशेष शब्दों को बोलने के संस्थान हैं। जिससे मदद मिलती है।

3. समय बीतने के साथ शाब्दिक आदतें स्वयं में स्वचालित (Automatic) बन जाती हैं। इसलिए गत्यात्मक क्रिया (Motor activity) घट जाती है और आंतरिक क्रिया बढ़ जाती है।

4. चूंकि शब्द वस्तुओं के अनुकूलन होते हैं इसलिए यदि किसी वस्तु की अनुपस्थिति में भी उसकी क्रिया होता है क्योंकि उसकी उपस्थिति में होता है।

5. जब शब्द (word) की ओर से बोलने की आवश्यकता नहीं होती है और उसे अभ्यास्त के रूप में बोल सकते हैं तो इससे शब्दों का आंतरिक भाषण की क्रिया होती जा सकती है।

6. आंतरिक क्रियाएं एक श्रृंखला के रूप में हो सकती हैं जो अभ्यास्त क्रियाओं की नहीं श्रृंखला चिंतन है।

7. लगातार अभ्यास होने के कारण आंतरिक भाषा में इस हद तक प्रगति हो जाती है कि उसमें काफी जटिलता तीव्रता एवं कुशलता है। जिस तरह यदि किसी प्रश्न का उत्तर मन ही मन बोलता रहता है।

8. चिंतन वास्तव में एक प्रयत्न तथा भूल प्रक्रिया है। जिस तरह यदि किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढते समय बोलता रहता है उसी तरह समस्या का समाधान करते समय यदि मन ही मन बोलता रहता।